पच्चीस प्रकार के रोगों की चिकित्सा में केकड़ों का प्रयोग करते हैं पारंपरिक चिकित्सक

* जटिल रोगों में आंतरिक और बाहरी उपयोग

* 60 से अधिक विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सक दे रहे हैं सेवाएं

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि भले ही राज्य के किसान केकड़ों की खेतों में उपस्थिति से परेशान हो पर पारंपरिक चिकित्सकों के लिये धान के खेतों से एकत्र किये गये केकड़े बहुमूल्य औषधियों के स्त्रोत हैं। पारंपरिक चिकित्सक 25 से भी अधिक प्रकार के रोगों में केकड़ों का प्रयोग कर रहे है। यूं तो केकड़ों का भोजन के रुप में विश्व के बहुत से भागों में प्रयोग किया जाता है पर औषधियों के स्त्रोत के रुप में केकड़ों का प्रयोग केवल कुछ ही भागों में प्रचलित है। छत्तीसगढ़के पारंपरिक चिकित्सक इस ज्ञान में समृद्ध है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि यद्यपि इसके वैज्ञानिककारण स्पष्ट नही हैं पर पारंपरिक चिकित्सक धान के खेतों से एकत्र किये गये केकड़ों का ही प्रयोग करते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों मे केकड़ों का प्रयोग पथरी की चिकित्सा मे होता है। पथरी को तोड़कर मूत्रमार्ग से बाहर निकालने वाली वनौषधियों के साथ केकड़ों का प्रयोग उनकी दक्षता को बढ़ा देता है। प्रसव के बाद कमजोर महिलाओं को बलवर्द्धक के रुप में केकड़ों के आंतरिक प्रयोग की सलाह पारंपरिक चिकित्सक देते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक केकड़े को जलाकर राख एकत्र कर लेते हैं। इस राख को लंबे समय तक विभिन्न रोगों के इलाज के प्रयोग किया जाता है। श्वांस रोगों से प्रभावित रोगियों के लिये यह वरदान माना जाता है। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक राख के जलीय घोल का छिड़काव वनौषधियों को औषधिय गुणों से समृद्ध बनाने के लिये करते है। सरफोंक नाम वनौषधि की जड़ों के एकत्रण के एक सप्ताह पूर्व जड़ों को राख के जलीय घोल से सींचा जाता है। बड़े वृक्षों में भी राख का इस तरह उपयोग होता है। दक्षिण छतीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक स्त्री जनन रोगों की चिकित्सा में केकड़ों का प्रयोग करते है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र में केकड़ों का प्रयोग कामोत्तेजक की तरह होता है। इनका प्रयोग अल्पमात्रा में किया जाता है। इसकी अधिक मात्रा पाचन तंत्र को बिगाड़ देती है। राज्य में अब तक 6 8 ऐसे पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है। जो कि केकड़ों के पारंपरिक चिकित्सकीय उपयोग मे दक्ष है। पंकज अवधिया ने अपने शोध लेखों के माध्यम से उनके ज्ञान का दस्तावेजीकरण कर लिया है। उनका मानना है कि श्वांस रोगों की चिकित्सा में केकड़ों का सफलतापूर्वक उपयोग यह इंगित करता है कि इस दिशा मे वैज्ञानिक शोधों की आवश्यकता है।